गाँधी का सत्याग्रह दर्शन : वश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr Alka
Department of Political Science
Babu Shobha Ram Government Arts College , Alwar

प्रस्तावना –

"सत्याग्रह' का मूल अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह (सत्य अ आग्रह) सत्य को पकड़े रहना और इसके साथ अहिंसा को मानना । अन्याय का सर्वथा वरोध(अन्याय के प्रति वरोध इसका मुख्य वजह था) करते हुए अन्यायी के प्रति वैर भाव न रखना , सत्याग्रह का मूल लक्षण है। हमें सत्य का पालन करते हुए निर्भयतापूर्वक मृत्य का वरण करना चाहिए और मरते मरते भी जिसके वरुद्ध सत्याग्रह कर रहे हैं , उसके प्रति वैर भाव या क्रोध नहीं करना चाहिए।' "सत्याग्रह' में अपने वरोधी के प्रति हिंसा के लए कोई स्थान नहीं है। वे अहिंसा वादी थे । धैर्य एवं सहानुभूति से वरोधी को उसकी गलती से मुक्त करना चाहिए , क्यों क जो एक को सत्य प्रतीत होता है, वहीं दूसरे को गलत दिखाई दे सकता है। धैर्य का तात्पर्य कष्ट सहन से है। इस लए इस सद्धांत का अर्थ हो गया, " वरोधी को कष्ट अथवा पीड़ा देकर नहीं, बल्कि स्वयं कष्ट उठाकर सत्य का रक्षण।' महात्मा गांधी ने कहा था क सत्याग्रह में एक पद "प्रेम ' अध्याहत है। सत्याग्रह की सं ध में मध्यम पद का लोप है। सत्याग्रह यानी सत्य के लए प्रेम द्वारा आग्रह। (सत्य + प्रेम + आग्रह = सत्याग्रह)गांधी जी ने लार्ड इंटर के सामने सत्याग्रह की सं क्षप्त व्याख्या इस प्रकार की थी-"यह ऐसा आंदोलन है जो पूरी तरह सच्चाई पर कायम है और हिंसा के उपायों के एवज में चलाया जा रहा। ' अहिंसा सत्याग्रह दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है, क्यों क सत्य तक पहुँचने और उन पर टिके रहने का एकमात्र उपाय अहिंसा ही है। और गांधी जी के ही शब्दों में "अहिंसा कसी को चोट न पहुँचाने की नकारात्मक (निगेटिव) वृत्तिमात्र नहीं है , बल्कि वह स क्रय प्रेम की वधायक वृत्ति है।'

सत्याग्रह में स्वयं कष्ट उठाने की बात है। सत्य का पालन करते हुए मृत्यु के वरण की बात है। सत्य और अहिंसा के पुजारी के शस्त्रागार में "उपवास ' सबसे शक्तिशाली शस्त्र है। जिसे कसी रूप में हिंसा का आश्रय नहीं लेता है, उसके लए उपवास अनिवार्य है। मृत्यु पर्यंत कष्ट सहन और इस लए मृत्यु पर्यंत उपवास भी, सत्याग्रही का अंतिम अस्त्र है। ' परंतु अगर उपवास दूसरों को मजबूर करने के लए आत्मपीड़न का रूप ग्रहण करे तो वह त्याज्य है : आचार्य वनोबा जिसे सौम्य , सौम्यतर, सौम्यतम सत्याग्रह कहते हैं , उस भू मका में उपवास का स्थान अंतिम है। "सत्याग्रह' एक प्रतिकारपद्धति ही नहीं है , एक व शष्ट जीवनपद्धति भी है जिसके मूल में अहिंसा , सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, निर्भयता, ब्राह्मचर्य, सर्वधर्म समभाव आदि एकादश व्रत हैं। जिसका व्यक्तिगत जीवन इन व्रतों के कारण शुद्ध नहीं है , वह सच्चा सत्याग्रही नहीं हो सकता। इसी लए वनोबा इन व्रतों को "सत्याग्रह निष्ठा ' कहते हैं। "सत्याग्रह' और "नि:शस्त्र प्रतिकार ' में उतना ही अंतर है , जितना उत्तरी और द क्षणी ध्रुव में। नि:शस्त्र प्रतिकार की कल्पना एक निर्बल के अस्त्र के रूप में की गई है और उसमें अपने उद्देश्य की स द्ध के लए हिंसा का उपयोग वर्जित नहीं है , जब क सत्याग्रह की कल्पना परम शूर के अस्त्र के रूप में की गई है और इसमें कसी भी रूप में हिंसा के प्रयोग के लए स्थान नहीं है। इस प्रकार सत्याग्रह निष्क्रिय स्थिति नहीं है। वह प्रबल स क्रयता की स्थिति है। सत्याग्रह अहिंसक प्रतिकार है , परंतु वह निष्क्रिय नहीं है।

संकेत शब्द - अहिंसा, सहानुभूति, धैर्य, आग्रह, सर्वधर्म समभाव, उपवास, अपरिग्रह

सत्याग्रह का अर्थ -

सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लिये आग्रह करना या विद्यमान सत्य पर हटे रहना। गांधीजी ने इस शब्द का प्रथम प्रयोग दक्षिणी अफ्रीका में किया। गाँधीजी ने दक्षिणी अफ्रीका के भारतीयों का एक संगठन बनाया था ताकि अफ्रीकी सरकार द्वारा ऊपर से लादे गये

अन्यायपूर्ण कानूनों के विरुद्ध अहिंसक आंदोलन किया जा सके। 1906 में इस आन्दोलन के पूरे अर्थ को व्यक्त कर पाने वाले शब्दों को ढूंढ निकालने की आवश्यकता का अनुभव हुआ था। गांधी जी ने आत्मकथा में लिखा है "सत्याग्रह" शब्द की उत्पत्ति के पहले उस वस्तु की उत्पत्ति हुई। उत्पत्ति के समय तो मैं स्वयं भी उसके स्वरूप को पहचान न सका था सब कोई उसे गुजराती में पेसिव रेजिस्टेन्स के अंग्रेजी नाम से पहचानने लगे। जब गोरों की एक सभा में मैंने देखा कि पेसिव रेजिस्टेन्स का संकुचित अर्थ किया जाता है, उसे कमजोरों का ही हथियार माना जाता है, उसमें द्वेष हो सकता है और उसका अन्तिम स्वरूप हिंसा में प्रकट हो सकता है, तब मुझे उसका विरोध करना पड़ा और हिन्दुस्तानियों की लड़ाई का सच्चा स्वरूप समझाना पड़ा और तब हिन्दुस्तानियों के लिए अपनी लड़ाई का परिचय देने के लिए नये शब्द की योजना करना आवश्यक हो गया पर मुझे वैसा स्वतंत्र शब्द किसी तरह सूझ नहीं रहा था अतएव उसके लिए नाममात्र का इनाम रखकर मैंने इण्डियन ओपीनियन के पाठकों में प्रतियोगिता करवाई। इस प्रतियोगिता के परिणामस्वरूप मगनलाल गांधी के सत्आग्रह की संधि करके सदाग्रह शब्द बनाकर भेजा । इनाम उन्हें मिला पर सत्याग्रह शब्द को अधिक स्पष्ट करने के विचार से मैंने बीच में य अक्षर और बढ़ाकर सत्याग्रह शब्द बनाया और गुजराती में यह लड़ाई इस नाम से पहचानी जाने लगी।

1908 में सत्याग्रह की उत्पत्ति के बारे में पूछे जाने पर गांधी जी ने जो कुछ बताया वह श्री डोक के शब्दों में इस प्रकार से है – जहां तक गांधी जी का सम्बंध है यह तो इस सिद्धान्त (पेसिव रेजिस्टेन्स) की उत्पत्ति और विकास का कारण कुछ और ही बतलाते हैं। उनका कहना है, बचपन में मदरसे में सीखा हुआ नीति विषयक एक छप्पय मेरे मन पर हमेशा के लिए अंकित हो गया। इसका सार है कि पानी पिलाने वाले को बदले में भोजन भी करा दिया तो बड़ा काम नहीं किया, बड़ी बात तो तब है जब बुराई का बदला भलाई से दिया जाए। छुटपन में इस छप्पय का मुझ पर बड़ा असर हुआ था और मैं इसकी सीख पर अमल करने की कोशिश भी करता रहा उसके बाद दूसरा असर मुझ पर गिरि प्रवचन का हुआ।

सत्याग्रह का मूल अभिप्राय अहिंसा में अभेद निष्ठा रखने वाले मनुष्य का सत्य के प्रति आग्रह है एक अहिंसक कार्य पद्धति के रूप में सत्याग्रह का अर्थ है ऐसा दृष्टिकोण जिसमें सबके प्रति जाग्रत प्रेम और सबके लिये कष्ट सहने की तत्परता व्यक्ति की प्रेरणा बन जाये इस प्रकार सत्याग्रह को आत्मबल या प्रेमबल का नाम भी दिया जा सकता है। गांधी जी ने कहा है इसका (सत्याग्रह का) अंग्रेजी में पर्याय दूथ फोर्स (सत्यशक्ति) है। मैं समझता हूँ टालस्टाय ने इसे आत्मशक्ति या प्रेमशक्ति भी कहा है और यह ऐसी ही है। 8

सत्याग्रह के मूल सद्धांत-

सत्याग्रह के लए आवश्यक तीन मूल सद्धांत हैं: सत्य, अहिंसा और आत्म-पीड़ा। ये सत्याग्रह के स्तम्भ कहलाते हैं। उन्हें न समझ पाना गांधी की अहिंसा को समझने में बाधा है। ये तीन मूल तत्व संस्कृत शब्दों के अनुरूप हैं:

सत / सत्य - खुलापन, ईमानदारी और निष्पक्षता

अहिंसा / अहिंसा का अर्थ है - दूसरों को चोट पहुँचाने से इनकार।

तपस्या - आत्म-त्याग करने की इच्छा।

सत्याग्रह का दार्शनिक विवेचन

अग्नि और सोम अग्नि और सोम की परस्पर अनुस्यूत यज्ञमयी अवस्था को श्ब्रह्मश कहा गया है। सृष्टि विज्ञान में ये दोनों तत्त्व धर्मी और धर्म या द्रव्य और गुण कहे गये हैं। मानव जीवन और मानव समाज के संदर्भ में भी यही दो शक्तियाँ हैं जिन्हें हम श्सत्यश और श्प्रेमश कह सकते हैं अग्नि श्तेजश और श्बल का प्रतीक है, सोम माधुर्य एवं सरसता का । इसलिये सत्य में शक्ति है, प्रेम में करूणा शक्ति को यदि करुणा का अभिषेक नहीं मिला तो वह निरंतर

निरंकुश एवं निर्मम होती जाएगी। इसी तरह यदि करुणा को शक्ति का अधिष्ठान नहीं मिला तो वह निस्तेज एवं निर्वीर्य अकिंचनता का पर्याय बन जाएगी। इसीलिये आधुनिक युग में हमारे यहां राजा राममोहन राय से लेकर गांधी जी तक सभी ने अध्यात्म के साथ अहिंसा, सत्य के साथ प्रेम, ज्ञानयोग के साथ कर्मयोग का समन्वय साधने की विराट् चेष्टा की है। यही समन्वय सत्याग्रह दर्शन का मेरूदण्ड है।

सत्य ही धर्म है:– सत्याग्रह के लिए सत्य भी चाहिए और प्रेम भी सत्य इसीलिये कि सत्य के अतिरिक्त किसी का अस्तित्व नहीं सत्याग्रह का मूल है सत्य का आग्रह या सत्य का बल और सत्यबल ही धर्मबल भी है ऋषियों ने सत्य को धर्म के रूप में ही देखा है श्सत्यं धर्माय दृष्टये । सत्य ही धर्म की सच्ची प्रतिष्ठा है – धर्म प्रतिष्ठितरू इसीलिए सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं, कोई नीति नहीं, कोई तप नहीं, कोई बल नहीं सत्य पर ही सृष्टि संस्थित है श्सत्येन विधृता पृथ्वीः । सत्य से ही सूर्य तपता है, वायु चलता है और सत्य पर ही स्वर्ग भी अधिष्ठित है। संक्षेप में सृष्टि में सत्य के सिवा किसी अन्य चीज की सत्ता नहीं है। प्रकृति सत्य का स्वयं साक्ष्य है और परमेश्वर इसका साक्षी है सत्य को तो स्वयं परब्रहम् परमेश्वर भी माना गया है। –"सत्यं ब्रहम सनातन।"

जहां धर्म है वहीं जय है :–जहां सत्य है वहीं धर्म है और जहां धर्म है वहीं जय है– श्यतो धर्मः ततो जयः जहां सत्य है वहीं जय है श्सत्यमेव जयते नानृतम्" यह – संसार धर्म पर ही प्रतिष्ठित है श्धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठाष स्वयं मर्यादा पुरूषोत्तम – राम धर्म की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। धर्मविहीन मानव पशु के समकक्ष तो है ही, क्योंकि धर्म ही श्रुति है, धर्म ही आत्मा धर्म ही तत्त्वज्ञान, धर्म ही प्राणी का प्राण, विधि निषेध, पुण्य, सत्य एवं परमार्थ सार सर्वरच अद्वैत ब्रह्म ऊंकार भी है।ष जहां धर्म है वहीं ओज है, वहीं तेज है, धैर्य है, बल है ब्रह्मचर्य, श्री तथा सौन्दर्य है।ष धर्म ही सर्वत्र वन में या रण में, जल में या अग्नि में एकमात्र सहायक होता है।ष इस प्रकार अधर्म अल्पकाल के लिए भले ही वर्द्धमान प्रतीत होता हो, किन्तु अन्त में उसका विनाश सुनिश्चित है।

धर्म की स्थापना के लिये अवतरण :– धर्म की व्युत्पत्ति धारण (धारणाद धर्म) और धारणा (धिन्वाद धर्मः) दोनों से है। धारण का अर्थ है– दुःख से बचाना धारणा का अर्थ भी प्रायः वही है। श्दुःख से पीड़ित समाज को बचाना। जैसे राम ने रावण से एवं कृष्ण ने कंस से मानवता को बचाया है फिर गोवर्द्धन धारण कर ब्रज को बचाने का भी वृत्तान्त है। सत्य के साथ असत्य का और न्याय के साथ अन्याय का सृष्टि में निरंतर संघर्ष चला आ रहा है, इसलिये युग–युग में धर्म संस्थापना के लिये अवतार, पैगम्बर रसूल आदि का अवतरण होता रहा है।

'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे। 14

सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भी अन्याय को मिटाने की मानवी चेष्टा बराबर चलती रही है। जब–जब सत्ता सामान्य जन पर अनैतिक एवं अमानवीय कानून लावती रही है तब–तब सामान्य जन के असामान्य प्रतिनिधियों ने विरोध का स्वर तीव्र किया है। गांधी जी ने तो यहां तक कहा है कि अन्याय करने से अधिक पाप अन्याय सहना है जालिम वही होते हैं, जहां दब्बू होते हैं। 15 सत्याग्रही के लिए अन्याय को बर्दाश्त करना असहय और असंभव हो जाएगा वह अन्याय बर्दाश्त करने की अपेक्षा सर्वस्व त्याग करना अधिक आसान मानेगा क्योंकि सत्याग्रह में यदि अन्याय का प्रतिकार नहीं हो तो यह सब कुछ हो सकता है किन्तु उसे हम सत्याग्रह नहीं कह सकते सत्याग्रह के साथ शक्ति का संयोग होता है जिसके अभाव में सत्याग्रह निर्जीव एवं निस्तेज ही रह जाएगा। सत्याग्रह की शक्ति इसकी सजीवता, सक्रियता एवं तेजस्विता में है अधर्म एवं असत्य को मात्र निषेध कर देना या उसे ष्अपना शारीरिक अथवा आर्थिक सहयोग न देकर तटस्थ 16 रह जाना ही पर्याप्त नहीं होता उसके लिये यह आवश्यक है कि वह अपनी अहिंसात्मक योजना प्रस्तुत करे।

अन्याय का प्रतिकारः– अन्याय का प्रतिकार तो करना ही है, यह केवल हमारा जन्मसिद्ध अधिकार ही नहीं वरन् हमारा धर्म और कर्त्तव्य भी है परन्तु प्रतिकार का स्वरूप क्या होगा, इसके लिये मानवीय सभ्यता के इतिहास में पाँच अवस्थाओं का निदर्शन मिलता है। –

1. बुराई का बदला अधिक बुराई से अर्थात् हिंसा का बदला अधिक हिंसा से
2बुराई के बदले समान बुराई अर्थात् हिंसा के बदले हिंसा,
3. बुराई के बदले भलाई अर्थात् हिंसा के बदले अधिक अहिंसा,
4. बुराई के उपेक्षा अर्थात् हिंसा की उपेक्षा,
5.सद्विचार के लिए सहकार अर्थात् सात्विकतम् अहिंसा

हिंसा निरंतर नहीं हो सकती, क्योंकि हिंसा की आदत असंभव है अतः हिंसात्मक क्रान्ति आदतन संभव नहीं है क्योंकि इसके लिए किसी भी समूह में इतनी आध्यात्मिक और भौतिक सामर्थ्य नहीं होगी हिंसक शक्ति का उपयोग वास्तव में पशुबल के समक्ष आत्मबल एवं नीतिबल की नग्न पराजय है, क्योंकि यहाँ तर्क और माधुर्य के नाम पर शस्त्र एवं नृशंसता है इसीलिये गांधी ने अन्याय से लड़ने के लिए नीतिबल पर आधारित अहिंसक युद्ध प्रणाली का आविष्कार किया जिसे सत्याग्रह कहा गया है।ष हिंसा से अहिंसा, घृणा से प्रेम की ओर प्रगति ही हमारे सांस्कृतिक और नैतिक अभ्युत्थान का चिह्न है अन्याय के प्रति सात्विक क्रोध का तो अपना औचित्य भी है, क्योंकि यदि सत्याग्रही का सात्विक क्रोध अन्यायी के तामसिक क्रोध का नाश करता है तो उसमें हिंसा नहीं क्योंकि तब तो क्रोध का देवता ही क्रोध को खा जाता है। उदाहरण के लिये बच्चे के ऊपर माता के क्रोध में क्रोध है ही नहीं, वह तो वात्सल्य ही है।

सत्याग्रह में समता और प्रेम :–

यदि सत्याग्रह सत्य का ही आग्रह है तो सबसे बड़ा सत्य सभी प्राणियों की समता है श्समयं सर्वेषु भूतेषुश जीवन ही हमारा परम मूल्य है "नहि प्राणौरू प्रियतमं लोककिंचन विद्यते। जीवन को सर्वत्र सम्पन्न बनाने के लिए दूसरे को भी अपना बनाना पड़ेगा। सर्वत्र आत्मदर्शन ही प्रेम का आधार हैं। इसी को श्आत्मौपम्यस्य वृतिश भी कहते हैं सभी भूतों में एक ही आत्मा है और परमेश्वर का सर्वत्र निवास है। इसलिए प्रेम तो मानव स्वभाव भी है प्रेम ही सभ्यता और संस्कृ ति, धर्म और नैतिकता का अधिष्ठान है तथा हमारे जीवन–व्यवहार का आधार है। स्वामी रामदास ने कहा है कि जहां प्रेम और भक्ति नहीं वहाँ परमात्मा नहीं, क्योंकि परमेश्वर स्वयं प्रेम की प्रतिमूर्ति माने गए हैं। सत्याग्रह में तर्क का माधुर्य भी है और हथियार का बल भी ष तर्क चाहे कितना ही अपूर्व क्यों न हो वह किसी मूढाग्रही और दृढप्रतिज्ञ दुष्ट को समझा नहीं सकता। इस स्थिति में तर्कबल को त्याग कर पशुबल का प्रयोग किया जाए या आत्मबल पर अधिष्ठित कष्ट सहन और आत्मबलिदान का शीतलतम ब्रह्मास्त्र छोड़ा जाए?

पहला रास्ता रक्तिम क्रान्ति का है जिसे इतिहास अनेक बार आजमा चुका है उसके पुनरावर्तन से कोई लाभ नहीं फिर आज भी राजसत्ता की सर्वसंहारी अणु–शक्ति अगर किसी के सामने हारेगी तो वह वशिष्ठ के शीतलतम ब्रह्मास्त्र के आगे ही।ष विश्वामित्र के शास्त्राधारित क्षात्रबल का तो सवाल ही नहीं, इसी को गांधी बलवानों की अहिंसा या सत्याग्रह कहते थे जो आत्मरक्षण एवं आत्मोद्धार के लिए एकमात्र युगानुकूल साधना भी है। सत्याग्रह का सत्यबल वस्तुतः इसी आत्मबल या प्रेमबल पर प्रतिष्ठित है, जिसमें हिंसक प्रतिकार का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इस प्रकार सत्याग्रह चाहे प्रतिरोधात्मक हो या रचनात्मक, वह अन्याय एवं अत्याचार के विरोध में अहिंसक संघर्ष है।

सत्याग्रह में अन्तर्निहित तपश्चर्या व आत्मशुद्धीकरण :–

वस्तुतः सत्याग्रह गांधीवादी क्रान्ति की रीढ़ है गांधी अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं– ष्मेरे बचपन में राजकोट में दो अंधे प्रदर्शक थे उनमें से एक संगीतज्ञ था जब वह अपना बाजा बजाता था, उसकी उंगलियां तारों से तन्मयतापूर्वक सहज भाव से खेलती रहती थी और हरेक मंत्रमुग्ध की तरह उसका बजाना सुनता रहता था। इसी प्रकार प्रत्येक मानव हृदय में भी तार हैं यदि हम सिर्फ इतना जानते हों कि सही तार को कैसे छेड़ा जाय, हम उसका संगीत मुखर

कर सकते हैं। इसी से उन्होंने तपश्चर्या एवं आत्मशुद्धीकरण की पद्धति निकाली थी तपश्चर्या का निहितार्थ है–हृदय के माध्यम से मस्तिष्क से आवेदन करना। इसकी व्याख्या करते हुए गांधी ने कहा है मैं इस आधारभूत निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि यदि तुम कोई सचमुच महत्त्वपूर्ण काम करवाना चाहते हो तो तुम्हें न केवल विवेक को संतुष्ट करना होगा बल्कि हृदय को भी प्रेरित करना होगा बुद्धि का आवेदन मस्तिष्क के प्रति अधिक होता है, किन्तु हृदय तक प्रवेश तपश्चर्या के द्वारा ही संभव है। यह तपश्चर्या का ही दूसरा नाम है. यह गतिशील अहिंसा की अवस्था है।

आत्मशुद्धीकरण का अर्थ है असत् से अपने को अलग करने की शक्ति का संग्रह, अपने परिवेश से असहयोग गांधी जी आत्मशुद्धीकरण की पद्धति को पसन्द करते हैं क्योंकि उनका कहना है यदि शासक बुरे हैं तो अनिवार्यतः या पूर्णतः अपने जन्म के कारण ही ऐसे नहीं हैं बल्कि अधिकांशतः अपने परिवेश के कारण हैं और मेरी आशा है कि उसके बदलने से वे भी बदल जायेंगे यदि वे अपने परिवेश के प्रभुत्व में हैं तो निश्चय ही वध के योग्य नहीं हैं। परिवेश में परिवर्तन लाकर उन्हें भी परिवर्तित कर देना चाहिए।श श्इसके अतिरिक्त हिंसा एक या अधिक कुशासनों को नष्ट कर सकती है, किन्तु रावण के सिरों की तरह उनके स्थान पर दूसरे उग आयेंगे क्योंकि उनकी जड़ कहीं अन्यत्र ही है वह तो हममें है। यदि हम अपने को सुधार लें, शासक अपने आप सुधर जायेंगे। इस प्रकार सत्याग्रह प्रेम पर आधारित एक उपयोगी अस्त्र है। जयन्त बन्धोपाध्याय के अनुसार सत्याग्रह के द्वारा स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व के मूल्यों को न केवल संरक्षण मिलता है और उनकी वृद्धि होती है, केवल सत्याग्रह द्वारा ही उनकी अधिक से अधिक सुरक्षा और वृद्धि संभव है। सत्याग्रह अंतःस्थिति चौतन्य का धर्म है, यह हम सबमें अन्तर्निहित है। व्यक्ति इसका प्रयोग गार्हस्थिक क्षेत्र के समान ही सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में भी कर सकता है इसकी सार्वभौम प्रयोग क्षमता इसके स्थायित्व एवं अजेयत्व का प्रमाण है

गाँधीजी का मत है कि इसकी उपयोगिता निर्विवाद है यह एक ऐसी शक्ति है जो यदि सार्वभौम हो गई तो सामाजिक आदर्शों में क्रान्ति ला देगी और तानाशाही तथा सतत् वर्द्धमान सैनिकीकरण को नष्ट कर देगी जिनके जुए के नीचे पश्चिमी राष्ट्र कराह रहे हैं। और बेतरह पिसे जा रहे हैं और जो अब पूर्वीय राष्ट्रों को भी रौंद डालने के लिए कृतसंकल्प हैं। गाँधीजी का यह भी विश्वास रहा है कि सत्य के साथ अहिंसा को युक्त कर सारी दुनिया को झुका दिया जा सकता है।

निष्कर्ष -

सत्याग्रह अपने आप में सामाजिक संघर्ष और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने वाला एक आंदोलन है। यह अहिंसा का संपूर्ण दर्शन है। यह तभी कया जाता है जब अन्य सभी शांतिपूर्ण साधन अप्रभावी साबित हो जाते हैं। इसके मूल में अहिंसा है। वरोधी को बदलने, मनाने या जीतने का प्रयास कया जाता है। इसमें अपनी स्थिति के नि र्वाद सत्य को ऊंचा रखते हूए तर्क और ववेक दोनों की शक्तियों को एक साथ लागू करना शा मल है। सत्याग्रही स्वैच्छिक पीड़ा के कृत्यों में भी संलग्न है। वरोधी द्वारा की गई कोई भी हिंसा बिना प्रतिशोध के स्वीकार की जाती है। वरोधी केवल नैतिक रूप से दिवा लया हो सकता है यदि हिंसा अनिश्चित काल तक जारी रहे। सत्याग्रह अ भयान में कई तरीकों को लागू कया जा सकता है। स्टीफन मर्फी "असहयोग और उपवास" को प्रधानता देते हैं। गांधी की पद्धति के बारे में बर्ट्रेंड रसेल का यह कहना है: इस पद्धति का सार जिसे उन्होंने (गांधी) धीरे-धीरे अ धक से अ धक पूर्णता तक पहूंचाया वह उन चीजों को करने से इनकार करना था, जो अ धकारियों ने करना चाहा था, जब क कसी भी सकारात्मक कार्रवाई से परहेज कया था। आक्रामक प्रकार... गांधी के दिमाग में इस

पद्धति का हमेशा एक धा र्मक पहलू था... एक नियम के रूप में यह पद्धति अपनी सफलता के लए नैतिक बल पर निर्भर थी। मर्फी और रसेल गांधी के सद्धांत को पूरी तरह से स्वीकार नहीं करते हैं। माइकल नागलर जोर देकर कहते हैं क वे रचनात्मक कार्यक्रम की उपेक्षा करते हैं, जिसे गांधी सर्वोपरि मानते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गांधी– सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा मनजीवन ट्रस्ट पहली आवृत्ति 1957, पृ. 278
2. डोक, जोसेफ जे. एम. के. गांधी, पृ. 88
3. इंडियन ओपीनियन का गोल्डेन नम्बर, पृ. 09
4. ईशावास्योपनिषद् 15
5. वाल्मीकीय रामायण, अयोध्या कांड, 14/7
6. महाभारत शान्तिपर्व, अध्याय 162
7. महाभारत शान्तिपर्व, अध्याय 162
8. महाभारत, विदुर प्रजावर्ग 34
9. मुंडकोपनिषद् 3/1/6
10. तैत्तरीय आरण्यक 10 / 63 (कृष्ण यजुर्वेद)
11. महात्मा गांधी यंग इण्डिया 5.1.1922
12. किशोरलाल मशरूवाला, गांधी विचार दोहन, पृ. 52
13. जीन शार्प, गांधी बेल्ड्स द वेपन ऑफ मारल पावर, पृ. 9 18. महाभारत, अनुशासन पर्व अ. 145
14. ईशावास्योपनिषद् 1 गीता 6/30, 18/31
15. डॉ. राममनोहर लोयिा सिविल नाफरमानी, नया समाज नया मन, पृ. 1 21. काका कालेलकर, सत्याग्रह विचार और युद्धनीति, पृ. 73
16. हरिजन, 19 मई 1939, पृ. 136
17. यंग इण्डिया 5 नवम्बर 1931
18. हरिजन, 28 जुलाई 1940, पृ. 219
19. वही, 21 सितम्बर 1934, पृ. 280
20. जे. बंधोपाध्याय माओत्सेतुंग एण्ड गांधी पर्सपेक्टिव ऑन सोशल ट्रांसफोर्मेशन, 1973
21. **एसई जोन्स,गाँधी ,एक मत्र का चत्रण** ,108
22. **बी रसेल ,महात्मा गांधी,बोस्टन,अटलांटिक मा सक,दिसंबर** 1952,23